Toppersnotes
Unleash the topper in you

REET

राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा

Board of Secondary Education, Rajasthan

Level – II

(कला वर्ग)

भाग – 2 (ब)

संस्कृत

SIERRA INNOVATIONS

REET LEVEL – 2 (कला वर्ग)

CONTENTS

संस्कृत

1.	माहेश्वर सूत्र	1
	• वर्ण विचार उच्चारण स्थान	3
2.	सन्धिप्रकरणम्	6
3.	समास प्रकरण	17
4.	प्रत्यय	22
5.	छन्दः शास्त्र परिचय	35
6.	अव्यय प्रकरण	42
7.	शब्द रूप	46
8.	सर्वनाम रूप	54
9.	धातु रूप	58
10.	उपसर्ग (प्रादयः)	71
11.	वाच्य परिवर्तन	73
12.	सूक्तियाँ	75
13.	संख्या ज्ञानं/विशेषण–विशेष्य भाव	78
14.	समयज्ञानम्	85
15.	अलंकार	92
16.	प्रश्न निर्माण	95
17.	अशुद्धि संशोधन	97
18.	हिन्दी–संस्कृत अनुवाद	99
19.	विलोमार्थी शब्द	104
20.	पर्यायवाची शब्द	111
21.	वचन	114
22.	कारक	116
23.	राजस्थान के संस्कृत साहित्यकारों का योगदान	124

संस्कृत शिक्षा विधि

1.	संस्कृतशिक्षण विधयः	133
2.	नवीन विधियाँ/आधुनिक विधियाँ	140
3.	व्याकरणशिक्षणम्	150
4.	गद्यशिक्षणम्	157

प्रत्यय

प्रत्यय – प्रतीयते विधीयते इति प्रत्ययः

प्रत्ययों के मुख्यतः तीन भेद होते हैं –

1. कृत प्रत्यय
2. तद्धित प्रत्यय
3. स्त्री प्रत्यय

कृत प्रत्यय

- कृत प्रत्ययों में से 7 प्रत्यय 'कृत्य प्रत्यय' कहलाते हैं –
  1. तव्यत्
  2. तव्य
  3. अनीयर्
  4. केलिमर्
  5. यत्
  6. क्यप्
  7. ण्यत्
- अव्यय बनाने के लिए धातुओं में – क्त्वा, ल्यप्, तुमुन्।
- धातु से विशेषण बनाने के लिए – शतृ, शानच, तव्यत्, अनीयर्, यत्।
- भूतकालिक क्रिया के प्रयोग के लिए – क्त, क्तवतु, (तव्यत्, अनीयर, यत् करना चाहिए – क्रिया के वाचक)
- धातु से संज्ञा बनाने हेतु – तृच्, क्तिन, ण्वुल्, ल्युट्, आदि प्रत्ययों का प्रयोग किया जाता हैं।
- तव्यत् प्रत्यय में से त् का लोप होने पर 'तव्य' शेष रहता है।
- अनीयर् प्रत्यय का 'अनीय' शेष रहता है।
  इन प्रत्ययों का प्रयोग 'कर्मवाच्य' या 'भाववाच्य' में ही किया जाता है।

1. तव्यत् प्रत्यय

यथा –	पठितव्यः	पठितव्या	पठितव्यम्
	पठनीयः	पठनीया	पठनीयम्

2. अनीयर् प्रत्यय

	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
कृ + अनीयर्	करणीयः	करणीया	करणीयम्
क्री + अनीयर्	क्रयणीयः	क्रयणीया	क्रयणीयम्

3. तुमुन् प्रत्यय – इस प्रत्यय में अन्तिमं अक्षर न् का लोप हो जाने पर 'तुम्' शेष रहता है। तुमुन् प्रत्यय से बना अव्यय होता है।

यथा –	गम् + तुमुन्	–	गन्तुम्
	दृश + तुमुन	–	द्रष्टुम्
	मुच + तुमुन	–	मोक्तुम्
	जि + तुमुन	–	जेतुम्

4. **ण्वुल् प्रत्यय –** कर्ता अर्थ में धातु से ण्तुल् प्रत्यय का योग किया जाता है 'ण्वुल्' में 'वु' शेष रहता है, वु के स्थान पर 'अक' हो जाता है।

यथा –	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
कृ + ण्वुल् –	कारकः	कारिका	कारकम्

गम् – गमकः

पच् – पाचकः

प्र + आप् – प्रापकः

5. **तृच प्रत्यय** – तृच का 'तृ' शेष रहता है और 'च्' का लोप हो जाता है।

यथा –	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
	कर्ता	कर्त्री	कर्तृ
क्री –	क्रेतृ	क्रेता	
दा –	दातृ	दाता	
पठ –	पठितृ	पठिता	

6. **यत् प्रत्यय –** यत् में 'य' शेष रहता है व धातु में गुण हो जाता है।

यथा – नी – नेयम्

चि – चेयम्

क्री – क्रेयम्

श्रु – श्रव्यम

श्रि – श्रेयम्

नोट – ऋकारान्त धातुओं से 'यत्' नहीं लगता हैं।

- आकारान्त धातु के आ के स्थान पर ईत् (ई) हो जाता है, यत् प्रत्यय परे रहते तथा ई का ए गुण हो जाता है।

यथा – दा – देयम्

घ्रा – घ्रेयम्

पा – पेयम्

धा – धेयम्

स्था – स्थेयम्

प वर्गान्तर धातुएँ जिनकी उपधा में ह्रस्व अकार हो, से भाव और कर्म में यत् प्रत्यय होता है।

यथा – शप् – शप्यम्

वप् – वप्यम्

नम् – नम्यम्

7. ण्यत् प्रत्यय – ण्यत् में 'य' शेष रहता है। ण्यत् से पूर्व ऋ की वृद्धि हो जाती है। योग्य अर्थ बताने के लिए 'ण्यत्' प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है।

यथा – कार्यः	कार्या	कार्यम्
मृज्	मार्ग्यः	
स्मृ	स्मार्यम्	
ग्रह	ग्राह्यम्	

8. क्यप् प्रत्यय

- इण (इ), स्तु, शास, वृ, दृ और जुष् धातु से भाव और कर्म में 'क्यप्' प्रत्यय होता है।
- 'चाहिए' व 'योग्य' अर्थ में क्यप् प्रत्यय होता है तथा क्यप् में य शेष रहता है।
- धातु को तुक् का आगम होता है क्यप् प्रत्यय रहते है। तुक् का 'त्' शेष रहता है।

यथा –	इण – इत्यः	आदृ – आदृव्यः
	वृ – वृत्यः	जुष् – जुष्यः
	वृष् – वृष्यम्	दृश् – दृश्यः
	शास् –शिष्यः	रुच् – रुच्यम्
	स्तु – स्तुत्यः	

9. शतृ एवं शानच प्रत्यय – परस्मैदी धातुओं में शतृ का प्रयोग किया जाता है। शतृ के श् और ऋ का लोप होकर धातु में 'अत्' जुड़ता है।

- आत्मनेपदी धातुओं में शानच् प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है। शानच् के श् और च् का लोप होकर धातु के साथ आन जुड़ता है तथा म् आगम् होकर कही–कहीं 'मान' जुड़ता है।

यथा –	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
पठ् + शतृ (अत्)	पठन	पठन्ती	पठत्
सेव् + शानच् (मान्)	सेवमानः	सेवमाना	सेवमानम्
वृत् + शानच् (मान्)	वर्तमानः	वर्तमाना	वर्तमानम्
हस् + शतृ (अत्)	हसन्	हसन्ती	हसत्

- परस्मैपदी धातु में –

  कृ – कुर्वन
  गम् – गच्छन्
  भ्रम – भ्रमन्
  दृश् (पश्च) – पश्यन्
  इष् (इच्छ) – इच्छन्
  पा (पिब्) – पिबन्

- आत्मनेपदी धातु में –
  कृ – कुर्वाणः
  लभ् – लभमानः
  वृध –वर्धमानः
  दा – ददानः
  यज् – यजमानः

10. क्त एवं क्तवतु प्रत्यय

- किसी कार्य की समाप्ति का ज्ञान कराने के लिए अर्थात् भूतकाल के अर्थ में क्त और क्तवतु प्रत्यय का होते हैं।
- क्त प्रत्यय धातु से भाववाच्य या कर्मवाच्य में होता है और इसका 'त' शेष रहता है।
- क्तवतु प्रत्यय कर्तृवाच्य में होता है और इसका 'तवत्' शेष रहता है।
- क्त और क्तवतु के रूप तीनों लिंगों में चलते है।

यथा – गम् + क्तवतु – गतवान् गतवती गतवत्

गम् + क्त – गतः गता गतम्

धातु	**क्त**	**क्तवतु**
अर्च्	अर्चितः	अर्चितवान्
विकृ	विकृतः	विकृतवान्
स्मृ	स्मृतः	स्मृतवान्
व्यज्	व्यक्तः	व्यक्तवान्
स्था	स्थितः	स्थितवान्

- **क्त प्रत्ययान्त रूप**

परि त्यज् – परित्यक्तः

हन् – हतः

पच् – पक्वः

भिद् – भिन्नः

गम् – गतः

नी – नीतः

- **क्तवतु प्रत्ययान्त रूप**

परित्यज् – परित्यक्तवान्

पठ् – पठितवान्

दश् – दृष्टवान्

आनी – आनीतवान्

पा – पीतवान्

पृछ – पृष्टवान्

भुज् – भुक्तवान्

11. क्त्वा प्रत्यय

- क्त्वा प्रत्यय में से क् का लोप होकर केवल त्वा शेष रहता है।
- सेट धातुओं में 'इ' जुड़ता है। इ केवल वही जुड़ता है जहाँ क्रिया में इ के जोड़ें जाने की आवश्यकता होती है।
- क्त्वा और ल्यप् प्रत्यय वाले शब्द अव्यय हो जाते है। अतः इनका एक ही रूप होता है।

यथा – धृ – धृत्वा

नम् – नत्वा

पी – पीत्वा

गम् – गत्वा

भू – भूत्वा

पठ् – पठित्वा

लिख् – लिखित्वा

गा – गीत्वा

चल् – चलित्वा

श्रु – श्रुत्वा

12. ल्यूट् प्रत्यय

- भाववाचक संज्ञा बनाने में ल्यूट् प्रत्यय होता है नपुंसकलिग में।
- ल्यूट का 'यु' शेष रहता है। यु के स्थान पर 'युवोरनाकौ' सूत्र से 'अन' आदेश होता है।

यथा – धृ – धरणम्

कृ – करणम्

चि – चयनम्

पठ् – पठनम्

ग्रह – ग्रहणम्

भृ – भरणम्

लिख् – लेखनम्

13. घञ् प्रत्यय

- घञ् प्रत्यय का 'अ' शेष रहता है और इसके रूप पुल्लिंग में ही होते है।
- धातु को गुण या वृद्धि होती है।
- ण्यत्, घञ् प्रत्यय होने की स्थिति में धातु के च् को 'क्' तथा ज् के स्थान पर 'ग्' हो जाता है।

यथा – त्यज् – त्यागः

रम् – रामः

प्र + वह् – प्रवाहः

युज् – योगः

14. क्तिन् प्रत्यय – क्तिन् का 'ति' शेष रहता है तथा धातु के गुण, वृद्धि न होकर सम्प्रसारण होता है। क्तिन् प्रत्ययान्त शब्द स्त्रीलिंग में होते हैं। इनके रूप मति के समान चलते है।

यथा – मन् – मतिः
गा – गीतिः
सम् + कृ – संस्कृति
धृ – धृतिः
वच् – उक्तिः
भी – भीतिः
जन् – जातिः

तद्धित प्रत्यय – जिन प्रत्ययों का प्रयोग संज्ञा, सर्वनाम, आदि शब्दों के बाद किया जाता है। वे 'तद्धित प्रत्यय' कहलाते है।

यथा – उपगु + अण् – औपगवः

किसी वस्तु का समूह अर्थ बताने के लिए उस वस्तु में अण् प्रत्यय होता हैं।

यथा – मर्कट + अण् – मार्कटम्

मनुष्यम् + अण् – मानुष्यम्

(1) मतुप प्रत्यय

- 'वाला' अर्थ में शब्दों से मतुप् प्रत्यय होता है।
- मतुप् में 'उप्' का लोप होकर शब्दों से केवल 'मत्' जुड़ता है।
- अकारान्त और आकारान्त शब्दों में मतुप् प्रत्यय जोड़ने पर 'म' के स्थान पर 'व' हो जाता है। (मत् = वत्)

यथा – रस – रसवान्
बल – बलवान्
धी – धीमान्
गो – गोमान्

(2) त्व, तल् प्रत्यय – भाववाचक संज्ञा बनाने के लिए शब्दों से 'त्व' और 'तल्' (ता) प्रत्ययों का योग किया जाता है। त्व प्रत्यान्त शब्द नित्य नपुंसकलिंग (त्वम्) और तल् प्रत्ययान्त शब्द नित्य स्त्रीलिङ्ग (तल् = ता) में होते हैं।

यथा – शब्द	त्व प्रत्ययान्त	प्रत्ययान्त
मनुष्य	मनुष्यत्वम्	मनुष्यता
मूर्ख	मूर्खत्वम्	मूर्खता
विद्वस्	विद्वत्वम्	विद्वता

(3) मयट् प्रत्यय – 'विकार' और 'अवयव' के अर्थ में 'मयूट्' प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है। मयट् में से टकार का लोप हो जाने पर 'मय' शेष रहता है।

यथा – भस्म + मयट् – भस्ममयम्

सुवर्ण + मयट् – सुवर्णमयम्

(4) तमप् प्रत्यय – बहुतों में से एक को श्रेष्ठ या निकृष्ठ बताने के लिए शब्द के साथ तमप् प्रत्यय जोड़ा जाता है। तमप् में 'तम' शेष रहता है।

यथा –			
चतुर + तमप्	चतुरतमः	चतुरतमा	चतुरतमम्
गुरु + तमप्	गुरुतमः	गुरुतमा	गुरुतमम्
मधु + तमप्	मधुरतमः	मधुरता	मधुरतमम्

(5) तरप् प्रत्यय – दो वस्तुओं में से एक को श्रेष्ठ या निकृष्ठ बताने के लिए शब्द में 'तरप्' प्रत्यय जोड़ा जाता है।

- तरप् में 'तर्' शेष रहता है।

यथा –			
चतुर + तरप् –	चतुरतरः	चतुरतरा	चतुरतरम्
मृदु + तरप् –	मृदुतरः	मृदुतरा	मृदुतरम्

(6) इनि प्रत्यय – अकारान्त शब्दों में 'वाला' या 'युक्त' अर्थ में 'इनि' और 'ठन्' प्रत्यय का होते हैं।

- इनि का 'इन्' और 'ठन्' का 'ठ' शेष रहता है।

यथा –	
दण्ड + इनि – दण्डिन्	दण्डी
बल + इनि – बलिन्	बली

स्त्री प्रत्यय – पुल्लिंग शब्दों में जिन प्रत्ययों को लगाकर स्त्रीलिंग या स्त्रीवाचक शब्द बनाये जाते है, उन्हें स्त्री प्रत्यय कहते हैं।

ये 8 प्रकार के होते है –

1. आ (टाप् , डाप् , चाप् ,)
2. ई (ङीप्, ङीष्, ङीन्)
3. ऊङ
4. ति

(1) **टाप् प्रत्यय –** टाप् का 'आ' शेष रहता है –

यथा – अश्व + टाप् – अश्वा

ज्येष्ठ + टाप् – ज्येष्ठा

खट्व + टाप् – खट्वा

नोट – यदि पुल्लिंग शब्द के अन्त में 'अक्' हो तो आ (टाप्) प्रत्यय लगने पर 'इक' हो जाता है।

यथा – मूषक + टाप् – मूषिका

नायक + टाप् – नाकिा

(2) **ङीप् प्रत्यय –** शतृ, मतुप, क्त्वतु प्रत्ययान्त युक्त शब्दों में 'ङीप्' प्रत्यय होता है। ङीप् का 'ई' शेष रहता है।

यथा – भवत् + ङीप् – भवती (भवन्ती)

श्रीमत् + ङीप् – श्रीमती

कामिन् + ङीप् – कामिनी (शब्दों से स्त्रीलिंग में (ङीप्) प्रत्यय होता है।

नोट – अनुपसर्जन जो टित् आदि तदन्त जो अदन्त प्रतिपादिक उससे स्त्रीलिंग में ङीप् होता है।

देवट् + ङीप् – देवी

नदत् + ङीप् – नदी

वैनतेय + ङीप् – वैनतेयी

नोट – प्रथम अवस्थावाची अकारान्त पुल्लिंग शब्दों से स्त्रीलिंग में 'ङीप्' प्रत्यय होता है।

यथा – कुमार + ङीप् – कुमारी

चिरण्ट + ङीप् – चिरण्टी

नोट – अदन्त द्विगु समास के शब्दों में ङीप् प्रत्यय होता है।

यथा – त्रिलोक + ङीप् – त्रिलोकी

शताब्द + ङीप् – शताब्दी

(3) **ङीष् प्रत्यय –** जिसका षकार इत्संज्ञक हो ऐसे प्रतिपादकों से तथा गौर आदि शब्दों से पठित प्रतिपादकों से स्त्रीत्व की विवक्षा में ङीष् प्रत्यय होता है। ङीष् का ई शेष रहता है।

यथा – नर्तक + ङीष् – नर्तकी

गौर + ङीष् – गौरी

साधु + ङीष् – साध्वी

तनु + ङीष् – तन्वी

(4) **ति प्रत्यय –** युवन् शब्द से स्त्रीलिंग में 'ति' प्रत्यय होता है।

यथा – युवन + ति् – युवतिः

Toppersnotes
Unleash the topper in you

प्रत्यय के अन्य महत्वपूर्ण उदाहरण

धातु	तव्यत्	अनीयर्
गम्	गन्तव्यः	गमनीयः
मन्	मन्तव्यः	मननीयः
ज्ञा	ज्ञातव्यः	ज्ञानीयः
दृश्	द्रष्टव्यः	दर्शनीयः
मुञ्चु	मोक्तव्यः	मोचनीयः
रक्ष्	रक्षितव्यः	रक्षणीयः
प्रच्छ्	प्रष्टव्यः	प्रच्छनीयः
अस्	भवितव्यः	भवनीयः
लभ्	लब्धव्यः	लभनीयः
भिद्	भेत्तव्यः	भेदनीयः

तुमुन प्रत्यय

पठ् – पठितुम्
कृ – कर्त्तुम्
मुद् – मोदितुम्
अस् – भवितुम्
गृह – गृहीतुम्
क्रुध – क्रोद्धुम्
ज्ञा – ज्ञातुम्
दा – दातुम्
ब्रू – वक्तुम्
पा – पातुम्
लभ् – लब्धुम्

ण्वुल् प्रत्यय

हन् – घातकः
वद् – वादकः
छिद् – छेदकः
कृ – कारकः
धा – धायकः
भिद् – भेदकः
दह् – दाहकः
गम् – गमकः
जन् – जनकः
नी – नायकः
दृश् – दर्शकः

तृच् प्रत्यय

वह् – वोढा
पठ् – पठिता
सृज – स्त्रष्टा
भुज् – भोक्ता
हन् – हन्ता
श्रु – श्रोता
क्री – क्रेता
पच् – पक्ता
हृ – हर्ता
भिद् – भेत्ता
प्रच्छ् – प्रष्टा
गम् – गन्ता

यत् प्रत्यय

शप् – शप्यम्
पा – पेयम्
ध्यै – ध्येयम्
लभ् – लभ्यम्
गै – गेयम्
भू – भव्यम्
क्री – क्रेयम्
ज्ञा – ज्ञेयम्

Toppersnotes
Unleash the topper in you

धा	–	धेयम्
हन्	–	वध्यः
सह्	–	सह्यम्
श्रु	–	श्रव्यम्
जि	–	जेयम्

ण्यत् प्रत्यय

मृज्	–	मार्ग्यः
कुप्	–	कोप्यम्
हृ	–	हार्यम्
दुह्	–	दोह्यः
पच्	–	पाक्यः
याच्	–	याच्यम्
ऋ	–	आर्यः
वद्	–	वाद्यम्
वच्	–	वाक्यम्/वाच्यम्
यज्	–	याज्यम्

शतृ प्रत्यय

क्रीड्	–	क्रीडन्
वद्	–	वदन्
पत्	–	पतन्
पा	–	पिबन्
गम्	–	गच्छन्
श्रु	–	श्रृण्वन्
त्यज्	–	त्यजन्
वस्	–	वसन्
स्था	–	तिष्ठन्
हन्	–	हनन्
कुप्	–	कुप्यन्
कृ	–	कुर्वन्

शानच् प्रत्यय

कम्प्	–	कम्पमानः
मुद्	–	मोदमानः
जन्	–	जायमान्
कृ	–	कुर्वाणः
ज्ञा	–	जानानः
शी	–	शयान्
ब्रू	–	ब्रुवाणः
भुज्	–	भुञ्जनः
नी	–	नयमानः
क्री	–	क्रीणान्

क्त्वा प्रत्यय

क्रुध्	–	क्रुद्ध्वा
हन्	–	हत्वा
अस्	–	भूत्वा
वद्	–	उदित्वा
धा	–	हसित्वा
क्री	–	क्रीत्वा
दा	–	दत्वा
गम्	–	गत्वा
क्षिप्	–	क्षित्वा

क्त प्रत्यय, क्तवतु प्रत्यय

मन्	मतः	मतवान्
जि	जितः	जितवान्
हृ	हृतः	हृतवान्
शिक्ष्	शिक्षितः	शिक्षितवान्
क्रीड्	क्रीडितः	क्रीडितवान्
दृश	दृष्टः	दृष्टवान्
लभ्	लब्धः	लब्धवान्

प्रच्छ्	पृष्टः	पृष्टवान्
दह्	दग्धः	दग्धवान्
अद्	जग्धः	जग्धवान्
रच्	रचितः	रचितवान्
हा	हीनः	हीनवान्
सह्	सोढः	सोढवान्
चुर्	चोरितः	चोरितवान्
प्राप्	प्राप्तः	प्राप्तवान्
छिद्	छिन्नः	छिन्नवान्
धा	हितः	हितवान्
हस्	हसितः	हसितवान्
रम्	रतः	रतवान्
हन्	हतः	हतवान्

ल्यूट् प्रत्यय

भृ – भरणम्
विद् – वेदनम्
सह् – सहनम्
मुद् – मोदनम्
रक्ष् – रक्षणम्
गम् – गमनम्
लिख् – लेखनम्
हस् – हसनम्
दुह् – दोहनम्
त्यज् – त्यजनम्
रूद् – रोदनम्
ज्वल् – ज्वलनम्
स्था – स्थानम्

घञ् प्रत्यय

कुप् – कोपः
बुध – बोधः
मुह् – मोहः
तृ – तारः
नि – न्यायः
शम् – शमः
युज् – योगः
मृज् – मार्गः
धृ – धारः
वद् – वादः
हृ – हारः
हस् – हासः
पच् – पाकः

क्तिन् प्रत्यय

वृध् – वृद्धिः
स्तु – स्तुतिः
भी – भीतिः
रम् – रतिः
कृ – कृतिः
भ्रम् – भ्रान्तिः
बुध् – बुद्धिः
गम् – गतिः
यम् – यतिः
रूह् – रूढिः

मतुप प्रत्यय

ऊर्मि – ऊर्मिमान्
श्री – श्रीमान्
धी – धीमान्

पुत्र	–	पुत्रवान्
रस्	–	रसवान्
ज्ञान्	–	ज्ञानवान्
बुद्धि	–	बुद्धिमान्
भूमि	–	भूमिमान्
गो	–	गोमान्
स्पर्श	–	स्पर्शवान्

त्व, तल् प्रत्यय

प्रभुः	प्रभुत्वम्	प्रभुता
सम	समत्वम्	समता
जन	जनत्वम्	जनता
दीर्घ	दीर्घत्वम्	दीर्घता
पटु	पटुत्वम्	पटुता
पशु	पशुत्वम्	पशुता
मृदु	मृदुत्वम्	मृदुता
पवित्र	पवित्रत्वम्	पवित्रता
देव	देवत्वम्	देवता
मग	ममत्वम्	ममता

तमप् प्रत्यय, तरप् प्रत्यय

कृश	कृशतमः	कृशतरः
बहु	बहुतमः	बहुतरः
क्षुद्र	क्षुद्रतमः	क्षुद्रतरः
दूर	दूरतमः	दूरतरः
प्रिय	प्रियतमः	प्रियतरः
पशु	पशुतमः	पशुतरः
मृदु	मृदुतमः	मृदुतरः
श्रेष्ठ	श्रेष्ठतमः	श्रेष्ठतरः
पटु	पटुतमः	पटुतरः

इनि प्रत्यय

ज्ञान	–	ज्ञानिन्
पाप	–	पापिन्
दण्ड	–	दण्डिन्
योग	–	योगिन्
धन्	–	धनिन्
मन्त	–	मन्तिन्

टाप् प्रत्यय

अज्	–	अजा
बाल	–	बाला
सर्व	–	सर्वा
कनिष्ठ	–	कनिष्ठा
धावक	–	धाविका
पाठक	–	पाठिका
मेध	–	मेधा
वृद्ध	–	वृद्धा
अश्व	–	अश्वा
खट्व	–	खट्वा
सरल	–	सरला
चटक	–	चटका
बालक	–	बालिका

ङीप् प्रत्यय

कर्तृ	–	कर्त्री
भवत्	–	भवती
इन्द्र	–	एन्द्री
कीदृश	–	कीदृशी
अक्ष	–	अक्षिकी
भरत	–	भारती

श्रीमत् – श्रीमती

नदट् – नदी

सुपर्णा – सौपर्णेयी

तादृश – तादृशी

नेतृ – नेत्री

ङीष् प्रत्यय

गुरु – गर्वी

हिम – हिमानी

रुद्र – रुद्राणी

इन्द्र – इन्द्राणी

ब्राह्मण – ब्राह्मणी

गौर – गौरी

मृदु – मृद्वी

तनु – तन्वी

पृथु – पृथ्वी

दाक्षि – दाक्षी

कुन्ति – कुन्ती

लधु – लध्वी

सर्वनाम रूप

संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं। संस्कृत व्याकरण में कुल 35 सर्वनाम शब्द हैं। इनमें से कुछ प्रमुख निम्न हैं – सर्व, यद्, तद्, एतद्, इदम्, अदस्, अस्मद्, युष्मद् आदि।

मध्यम पुरुष के साथ सदैव 'युष्मद' शब्द तथा उत्तम पुरुष के साथ 'अस्मद्' शब्द प्रयुक्त होता हैं।

सर्वनाम रूप पुल्लिंग एकवचन में

विभक्ति	तद्	किम्	एतद्	यत्	सर्व
प्रथमा	सः	कः	एषः	यः	सर्वः
द्वितीया	तम्	कम्	एतम्	यम्	सर्वम्
तृतीया	तेन	केन	एतेन	येन	सर्वेण
चतुर्थी	तस्मै	कस्मै	एतस्मै	यस्मै	सर्वस्मै
पञ्चमी	तस्मात्	कस्मात्	एतस्मात्	यस्मात्	सर्वस्मात्
षष्ठी	तस्य	कस्य	एतस्य	यस्य	सर्वस्य
सप्तमी	तस्मिन्	कस्मिन्	एतस्मिन्	यस्मिन्	सर्वस्मिन्

सर्वनामरूप पुल्लिंग द्विवचन

विभक्ति	तद्	किम्	एतद्	यत्	सर्व
प्रथमा	तौ	कौ	एतौ	यौ	सर्वो
द्वितीया	तौ	कौ	एतौ	यौ	सर्वौ
तृतीया	ताभ्याम्	काभ्याम्	एताभ्याम्	याभ्याम्	सर्वाभ्याम्
चतुर्थी	ताभ्याम्	काभ्याम्	एताभ्याम्	याभ्याम्	सर्वाभ्याम्
पञ्चमी	ताभ्याम्	काभ्याम्	एताभ्याम्	याभ्याम्	सर्वाभ्याम्
षष्ठी	तयोः	कयोः	एतयोः	ययोः	सर्वयोः
सप्तमी	तयोः	कयोः	एतयोः	ययोः	सर्वयोः

सर्वनाम रूप पुल्लिंग बहुवचन में

विभक्ति	तद्	किम्	एतद्	यत्	सर्व
प्रथमा	ते	के	एते	ये	सर्वे
द्वितीया	तान्	कान्	एतान्	यान्	सर्वान्
तृतीया	तैः	कैः	एतैः	यैः	सर्वैः
चतुर्थी	तेभ्यः	केभ्यः	एतेभ्यः	येभ्यः	सर्वेभ्यः
पञ्चमी	तेभ्यः	केभ्यः	एतेभ्यः	येभ्यः	सर्वेभ्यः
षष्ठी	तेषाम्	केषाम्	एतेषाम्	येषाम्	सर्वेषाम्
सप्तमी	तेषु	केषु	एतेषु	येषु	सर्वेषु

Toppersnotes
Unleash the topper in you

सर्वनाम रूप पुल्लिंग में

मूलशब्द	प्रथमा			द्वितीया			तृतीया		
	एकवचन	**द्विवचन**	**बहवचन**	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
तद् (वह)	सः	तौ	ते	तम्	तौ	तान्	तेन	ताभ्याम्	तैः
किम् (क्या)	कः	कौ	के	कम्	कौ	कान्	केन	काभ्याम्	कैः
एतद् (यह)	एषः	एतौ	एते	एतम्	एतौ	एतान्	येन	एताभ्याम्	एतैः
यत् (जो)	यः	यौ	ये	यम्	यौ	यान्	एतेन	याभ्याम्	यैः
सर्व (सब)	सर्वः	सर्वौ	सर्वे	सर्वम्	सर्वौ	सर्वान्	सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वैः
इदम् (यह)	अयम्	इमौ	इमे	इमम्	इमौ	इमान्	अनेन	आभ्याम्	एभिः
अदस् (वह)	असौ	अमू	अमी	अमुम्	अमू	अमून्	अमुना	मूभ्याम्	अमीभिः
अस्मद् (मैं)	अहम्	आवाम्	वयम्	माम्	आवाम्	अस्मान्	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
युष्मद् (तुम)	त्वम्	युवाम्	यूयम्	तवाम्	युवाम्	युष्मान्	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
भवत् (आप)	भवान्	भवन्तौ	भवन्तः	भवन्तम्	भवन्तौ	भवतः	भवता	भवद्भ्याम्	भवद्भिः

चतुर्थी			पंचमी		
एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः	तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्यः
कस्मै	काभ्याम्	केभ्यः	कस्मात्	काभ्याम्	केभ्यः
एतस्मै	एताभ्याम्	एतेभ्यः	एतस्मात्	एताभ्याम्	एतेभ्यः
यस्मै	याभ्याम्	येभ्यः	यस्मात्	याभ्याम्	येभ्यः
सर्वस्मै	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः	सर्वस्मात्	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
अस्मै	आभ्याम्	एभ्यः	अस्मात्	आभ्याम्	एभ्यः
अमुष्मै	अमूभ्याम्	अमीभ्यः	अमुष्मात्	अमूभ्याम्	अमीभ्यः
मह्यम्	आवाभ्याम्	अस्मभ्यम्	मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्
तुभ्यम्	युवाभ्याम्	युष्मभ्यम्	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्
भवते	भवद्भ्याम्	भवद्भ्यः	भवतः	भवद्भ्याम्	भवद्भ्यः

षष्ठी			सप्तमी		
एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	ब्हुवचन
तस्य	तयोः	तेषाम्	तस्मिन्	तयोः	तेषु
कस्य	कयोः	केषाम	कस्मिन्	कयोः	केषु
एतस्य	एतयोः	एतेषाम्	एतस्मिन्	एतयोः	एतेषु
यस्य	ययोः	येषाम्	यस्मिन्	ययोः	येषु
सर्वस्य	सर्वयोः	सर्वेषाम्	सर्वस्मिन्	सर्वयोः	सर्वेषु
अस्य	अनयोः	एषाम्	अस्मिन्	अनयोः	एषु
अमुष्य	अमुयोः	अमीषाम्	अमुष्मिन्	अमुयोः	अमीषु
मम	आवयोः	अस्माकम्	मयि	आवयोः	अस्मासु
तव	युवयोः	युष्माकम्	त्वयि	युवयोः	युष्मासु
भवतः	भवतोः	भवताम्	भवति	भवतोः	भवत्सु

सम्बोधन– हे भवन्, हे भवन्तौ, हे भवन्तः

सर्वज्ञभूषण सर्वनाम रूप स्त्रीलिङ्ग में

मूलशब्द	प्रथमा			द्वितीया			तृतीया		
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तद् (वह)	सा	ते	ताः	ताम्	ते	ताः	तया	ताभ्याम्	ताभिः
किम् (क्या)	का	के	काः	काम्	के	काः	कया	काभ्याम्	काभिः
एतद् (यह)	एषा	एते	एताः	एताम्	एते	एताः	एतया	एताभ्याम्	एताभिः
यत् (जो)	या	ये	याः	याम्	ये	याः	यया	याभ्याम्	याभिः
सर्व (सब)	सर्वा	सर्वे	सर्वाः	सर्वाम्	सर्वे	सर्वाः	सर्वया	सर्वाभ्याम्	सर्वाभिः

चतुर्थी			पंचमी		
एकवचन	द्विववचन	बहुवचन	एकवचन	द्विववचन	बहुवचन
तस्मै	ताभ्याम्	ताभ्यः	तस्याः	ताभ्याम्	ताभ्यः
कस्मै	काभ्याम्	काभ्यः	कस्याः	काभ्याम्	काभ्यः
एतस्मै	एताभ्याम्	एताभ्यः	एतस्याः	एताभ्याम्	एताभ्यः
यस्मै	याभ्याम्	याभ्यः	यस्याः	याभ्याम्	याभ्यः
सर्वस्मै	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्यः	सर्वस्याः	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्यः

षष्ठी			सप्तमी		
एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तस्याः	तयोः	तासाम्	तस्याम्	तयोः	तासु
कस्याः	कयोः	कायाम्	कस्याम्	कयोः	कासु
एतस्याः	एतयोः	एतासाम्	एतस्याम्	एतयोः	एतासु
यस्याः	ययोः	यासाम्	यस्याम्	ययोः	यासु
सर्वस्याः	सर्वयोः	सर्वासाम्	सर्वस्याम्	सर्वयोः	सर्वासु

सर्वनाम रूप नपुंसकलिङ्ग में

मूलशब्द	प्रथमा			द्वितीया			तृतीया		
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तद् (वह)	तत्	ते	तानि	तत्	ते	तानि	तेन	ताभ्याम्	तैः
किम् (क्या)	किम्	के	कानि	किम्	के	कानि	केन	काभ्याम्	कैः
एतद् (यह)	एतत्	एते	एतानि	एतत्	एते	एतानि	येन	एताभ्याम्	एतैः
यत् (जो)	सत्	ये	यानि	सत्	ये	यानि	एतेन	याभ्याम्	यैः
सर्व (सब)	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि	सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वैः

चतुर्थी			पंचमी		
एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः	तस्याः	ताभ्याम्	तेभ्यः
कस्मै	काभ्याम्	केभ्यः	कस्याः	काभ्याम्	केभ्यः
एतस्मै	एताभ्याम्	एतेभ्यः	एतस्याः	एताभ्याम्	एतेभ्यः
यस्मै	याभ्याम्	येभ्यः	यस्याः	याभ्याम्	येभ्यः
सर्वस्मै	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः	सर्वस्याः	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः

षष्ठी			सप्तमी		
एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
तस्य	तयोः	तेषाम्	तस्मिन्	तयोः	तेषु
कस्य	कयोः	केषाम	कस्मिन्	कयोः	केषु
एतस्य	एतयोः	एतेषाम्	एतस्मिन्	एतयोः	एतेषु
यस्य	ययोः	येषाम्	यस्मिन्	ययोः	येषु
सर्वस्य	सर्वयोः	सर्वेषाम्	सर्वस्मिन्	सर्वयोः	सर्वेषु

अस्मद् और युष्मद्

एकवचन		द्विवचन		बहुवचन	
अहम्	त्वम्	आवाम्	युवाम्	वयम्	यूयम्
माम्	त्वाम्	आवाम्	युवाम्	अस्मान्	युष्मान्
मया	त्वया	आवाभ्याम्	युवाभ्याम्	अस्माभिः	युष्माभिः
मह्यम्	तुभ्यम्	आवाभ्याम्	युवाभ्याम्	अस्मभ्यम्	युष्मभ्यम्
मत्	त्वत्	आवाभ्याम्	युवाभ्याम्	अस्मत्	युष्मत्
मम	तव	आवयोः	युवयोः	अस्माकम्	युष्माकम्
मयि	त्वयि	आवयोः	युवयोः	अस्मासु	युष्मासु

अस्मद् (मैं)			युष्मद् (तुम)		
अहम्	आवाम्	वयम्	त्वम्	युवाम्	यूयम्
माम्, मा	आवाम्, नौ	अस्मान्, नः	त्वाम्, त्वा	युवाम्, वाम्	युष्मान्, वः
मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
मह्यम्, मे	आवाभ्याम्, नौ	अस्मभ्यम्, नः	तुभ्यम्, ते	युवाभ्याम्, वाम्	युष्मभ्यम्, वः
मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्
मम, मे	आवयोः, नौ	अस्माकम्, नः	तव, ते	युवयोः, वाम्	युष्माकम्, वः
मयि	आवयोः	अस्मासु	त्वयि	युवयोः	युष्मासु

नोट – अस्मद् और युष्मद् शब्दों के रूप तीनों लिङ्गों में यही रूप चलेगा। इनका सम्बोधन रूप नहीं होता।

वचन

वचन – संख्या को वचन कहते हैं। संस्कृत व्याकरण में वचन 3 होते है।

1. **एक वचन** – जो संख्या एक को निर्धारित करता है।
2. **द्विवचन** – जो संख्या 2 को निर्धारित करता है।
3. **बहुवचन** – जो दो से अधिक संख्याओं को निर्धारित करता है।

तरल पदार्थ व विग्रहित वस्तुओं के वचन का निर्धारण पात्र से होता है।

पुरुष – जो क्रिया का स्थान निर्धारित करता है वह पुरुष कहलाता है। पुरुष 3 होते है।

1. **उत्तम पुरुष** – जब कर्ता अस्मद् शब्द का हो तो क्रिया उत्तम पुरुष की होती है।
2. **मध्यम पुरुष** – जब कर्ता युस्मद् शब्द का हो तो क्रिया मध्यम पुरुष की होती है।
3. **प्रथम/अन्य पुरुष** – जब कर्ता संज्ञा शब्द या तत् शब्द का हो तो क्रिया प्रथम पुरुष की होती है।

उत्तम पुरुष सर्वबलदायी होता है।

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	सः/सा (वह)	तौ/ते (वे दोनों)	ते/ताः (वे सब)
द्वितीया	त्वम् (तुम)	युवाम् (तुम दोनों)	यूयम् (तुम सब)
तृतीया	अहम् (मैं)	आवाम् (हम दोनों)	वयम् (हम सब)

लकार – जो क्रिया का अर्थ निर्धारित करता है, उसे लकार कहते है। संस्कृत व्याकरण में लकार 10 होते है।

लकार	**क्रिया–अर्थ**
लट्	वर्तमानकालार्थ
लड्.	भूतकालार्थ
लृट्	भविष्यत् कालार्थ
लोट्	आज्ञार्थ
विधिलिङ्ग	चाहिए–अर्थ

धातु रूप – क्रिया का मूल रूप ही धातु होती है। धातु के 2 प्रकार होते है।

1. परस्मैपदी धातु [सकर्मक]
2. आत्मनेपदी धातु [अकर्मक]

पठ् धातु

लट् लकार (वर्तमान कालार्थ)

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	पठति	पठतः	पठन्ति
मध्यम पुरुष	पठसि	पठथः	पठथ
उत्तम पुरुष	पठामि	पठावः	पठामः

लृट् (भविष्यत् कालार्थ)

प्रथम पुरुष	पठिष्यति	पठिष्यतः	पठिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	पठिष्यसि	पठिष्यथः	पठिष्यथ
उत्तम पुरुष	पठिष्यामि	पठिष्यावः	पठिष्यामः

लङ्. (भूत कालार्थ)

प्रथम पुरुष	अपठत्	अपठताम्	अपठन्
मध्यम पुरुष	अपठः	अपठतम्	अपठत
उत्तम पुरुष	अपठम्	अपठाव	अपठाम

लोट् (आदेश, आज्ञार्थ)

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	पठतु	पठताम्	पठन्तु
मध्यम पुरुष	पठ	पठतम्	पठत
उत्तम पुरुष	पठानि	पठाव	पठाम

विधिलिङ्ग (चाहिए–अर्थ)

प्रथम पुरुष	पठेत्	पठेताम्	पठेयुः
मध्यम पुरुष	पठेः	पठेतम्	पठेत
उत्तम पुरुष	पठेयम्	पठेव	पठेम

आत्मनेपदी (सेवा करना)
(लट् लकार) सेव् धातु

प्रथम पुरुष	सेवते	सेवेते	सेवन्ते
मध्यम पुरुष	सेवसे	सेवेथे	सेवध्वे
उत्तम पुरुष	सेवे	सेवावहे	सेवामहे